विद्या भवन बालिका विद्यापीठ लखीसराय

वर्ग दशम् विषय संस्कृत शिक्षक श्यामउदय सिंह

ता:-०६/०६/२०२० पञ्चम: पाठ: जननी तुल्यवत्सला

भूमौ पतिते स्वपुत्रं दृष्ट्वा सर्वधेनूनां मातु: नेत्राभ्यामश्रूणि आविरासन सुरभेरिमामवस्थां दृष्ट्वा सुराधिप: तामपृच्छत् –"अयि शुभे !किमेवं रोदिषि ? उच्यताम् "इति ।सा च

"भो वासव ! पुत्रस्य दैन्यं दृष्ट्वा अहं रोदिमि । स: दीन इति जानन्नपि कृषक: तं बहुधा पीड़यति ।स: कृच्छ्रेण भारमुद्वहति।

इतरमिव धुरं वोढुं स: न शक्नोति एतत् भवान् पश्यति न?" इति प्रत्यवोचत् ।

"भद्रे! नूनम् सहस्राधिकेषु पुत्रेषु सत्स्वपि तव अस्मिन्नेव एतादृशम् वात्सल्यम् कथम् ?" इति

इन्द्रेण पृष्टा सुरभि: प्रत्यवोचत् –

शब्दार्था:-पतिते- गिरने पर सुरभे:- सुरभि की आविरासन -निकलने लगे सुराधिप:- देवताओं का राजा (इन्द्र)

शुभे -शुभ लक्षणों वाली किमेवम् -क्यों इस प्रकार उच्यताम् -कहो वासव -इन्द्र दैन्यम् -दीनता को रोदिमि -रोती हूं

दीन:-दुखी(लाचार) जानन्नपि -जानता हुआ भी कृच्छ्रेण -कठिनाई से उद्वहति -उठाता है इतरम् इव -दूसरे की तरह

वोढुम् -उठाने में प्रत्यवोचत् -उत्तर में बोली सहस्राधिकेषु -हजारों से अधिक सत्सु -होने पर एतादृशम् -ऐसा

वात्सल्यम् -पुत्र के लिए प्रेम कथम् -क्यों/कैसे इन्द्रेण -इन्द्र के द्वारा

अर्थ- भूमि पर गिरे हुए अपने पुत्र को देखकर सब गायों की माता सुरभि के आंखों में आंसू आने लगे।सुरभि की इस दशा को देखकर देवताओं के राजा (इन्द्र)ने उनको पूछा –"अरी शुभ लक्षणों वाली !क्यों इस तरह रो रही हो ?बोलो "।और यह-

हे इन्द्र !पुत्र की दीनता को देखकर मैं रो रही हूं। वह लाचार है,यह जानता हुआ भी किसान उसे अक्सर(अनेक बार) पीड़ा देता (पीटता) है।वह कठिनाई से भार(बोझ) उठाता है।दूसरे की तरह वह जुए को उठाने में समर्थ नहीं है।यह आप देखते हैं न? ऐसा उत्तर दिया।

“हे प्रिये! निश्चित ही ।हजारों अधिक पुत्रों के रहने पर भी तुम्हारा ऐसा प्रेम इसी में क्यों है?ऐसा इन्द्र के द्वारा पूछे जाने पर सुरभि बोली -